

Storia della Lingua Greca – Laurea Magistrale – 12.10.2011

Archil. fr. 5 W.²

- (⊗) ἀσπίδι μὲν Σαίων τις ἀγάλεται, ἤν παρὰ θάμῳ,
ἔντος ἀμώμητον, κάλλιπον οὐκ ἐθέλων
ψυχήν δ' ἐξεσάωσα. τί μοι μέλει ἀσπίς ἐκείνη;
ἐρρέτω· ἐξαυτίς κτήσομαι οὐ κακίω. (⊗)

Metro: distici elegiaci (6dāp hem hem: I γ I γ ὀζωπῶ I γ ὀζ I ω I ω I γ I γ I ζ I ρ I ρ I ω); *correptio* 'epica': vv. 1 ἀγάλεται, ἤν, 3 μέλει ἀσπίς, 4 ἐρρέτω· ἐξαυτίς, κτήσομαι οὐ.

Plut. *Inst. Lac.* 34, 239b (**om. 3-μέλει**) (I); (**1-3 μέλει**) Sext. Emp. *Pyrrh.* III 216 (II); (**1-3 ἐξεσάωσα**) Ar. *Pax* 1298s., 1301 (III); (**1s.**) Strab. X 2,17 (IV), XII 3,20 (cf. Apollod. *FGrHist* 244 F 178b) (V), *Vit. Arati* 77,1 Maass (VI); (**3-ἐξεσάωσα**) Procl. *ad Plat. Alc.* I 105a, 139,26 (p. 116 Segonds) (VII); (**3s.-ἐρρέτω**) *schol.* Ar. *Pac.* 1301 (VIII), Olympiod. *ad Plat. Gorg.* 141,1 Westerink (IX), Elias *Prol. philos.* 8 (CAG XVIII 22,21) (X), Ps.-Elias *ad Porph. Isag.* 12,19 (p. 16 Westerink) (XI). Cf. Critias *VS* 88 B 44, Philostr. *VA* 2,7, Eust. *ad Dion. Per.* 533, 767; (**1 Σαίων**) Hesych. σ 55 H. || **1** ἀσπίδι testt. pll. : -δα I(**Σg**), IV(x), V | Σαίων τις testt. pll. : Σ- τι V(codd. pll. : Σ- τισί V(e) : Σ- τινί V(z) : Σ- που V(x) : Σαίων V(w)) : σείων τις I(**Σg**) | ἀγάλεται testt. pll. : ἀνείλετο IV(**Denx**), V : ἀνεύλετο IV(**BWvs**) : ἀνήλετο IV(C) : ἀφείλετο IV(**g^{ac}**) | ἤν testt. pll. : τὴν IV, V | παρὰ testt. pll. : περὶ I, V | θάμῳ testt. pll. : -ον I(**Σ**), IV(C), V(**sn**) : -ων IV(v) : θάμμον V(**BD^{pc}**) : θάμβον **D^{ac}**) : ἄμμον V(x) || **2** ἐντος testt. pll. : ἐντός I, IV, V | κάλλιπον testt. pll. : -εν IV(**n**) : κάλλιπον IV(**D**), V(**δ**) : κάλλιπον V(**w**) : κάλιπον IV(**x**) || **3** ψυχήν δ' ἐξεσάωσα. τί μοι μέλει III, VIII : αὐτὸν μ' ἐξ- τ- μ- μ- VII, X : αὐ- μέν μ' ἐσάωσα τ- μ- μ- IX : ἐγὼ μ' ἔξεσα ὡς οὐ τ- μ- μ- XI : αὐτὸς δ' ἐξέφυγον θανάτου τέλος II || **3s.** τί μοι μέλει; ἀσπίς ἐκείνη / ἐρρέτω *malunt quidam* || **4** ἐξαυτίς Schaefer : -θις I(codd. pll. : -τῆς v) | κακίω I(codd. pll. : -ίωv I(**Φ**))

Archil. fr. 19 W.²

“οὐ μοι τὰ Γύγωϋ τοῦ πολυχρύσου μέλει,
οὐδ' εἴλε πῶ με ζῆλος, οὐδ' ἀγαίωμα
θεῶν ἔργα, μεγάλης δ' οὐκ ἐρέω τυραννίδος·
ἀπόπροθεν γὰρ ἔστιν ὄφθαλμῶν ἐμῶν”.

Metro: trimetri giambici (3ia: xI wl xI| wlI xI wuI); sinizesi: vv. 1 Γύγωϋ, 3 θεῶν, ἐρέω; tribraco per giambo: v. 3 ἔργα μεγάλης.

Plut. *Tranq. an.* 10, 470c (I); (**1**) Iub. Art. ap. Rufin. *GL* VI 563,18 (II); (**1-Γύγωϋ**) Arist. *Rh.* III 17, 1418b 23 (III), *schol. ad l.* (CAG XXI/2 256,6) (IV); (**3 μεγάλης-**) *schol.* Aesch. *Pr.* 224 (V). Cf. *Anacreont.* 8,1-4; (**1, 3**) *Et. Gud.* 537,26 Sturz ~ *Et. M.* 771,54; (**1 τὰ Γύγωϋ**) Hdt. I 12,2, Greg. Naz. *PG* XXXVII 683, 1453; (**3**) *Arg. Soph. OR* || **1** οὐ-μέλει testt. pll. : ΩΝΟΙΤΑΡΓΥΡΕΟΥΤΟΥΠΟΑΙΧΡΥΣΟΥ ΝΕΛΕΙ II(**R**) : ΩΛΣΕΙΤΑΡΓΥΡΕΟΥΤΟΥΠΟΑΙΧΡΥΣΟΥΜΕΛΕΙ II(**B**) : desunt Graeca in II(**A**) || **2** οὐδ' εἴλε πῶ με ζῆλος I(codd. pll.) : οὐδ' εἴμ' ἐγὼ ζηλωτός I(**C^{1V¹}**) | ἀγαίωμα I(codd. pll.) : ἀγάζομαι I(**S^{2V}**) || **3** ἐρέω Schneidewin : ἐρῶ I, V

Archil. fr. 101 W.²

ἑπτὰ γὰρ νεκρῶν πεσόντων, οὓς ἐμάρψαμεν ποσίν,
χείλιοι φονῆές εἴμεν,

Metro: tetrametri trocaici catalettici (4trp: I wl χύwI xI| wl χύwuI), il secondo mutilo del secondo emistichio.

Plut. *Galb.* 27,9 || **2** χείλιοι Fick : χίλ- codd. | εἴμεν Renner : ἔσμ- codd.

Archil. fr. 114 W.²

οὐ φιλέω μέγαν στρατηγὸν οὐδὲ διαπεπλιγμένον
οὐδὲ βοστρύχοισι γαῦρον οὐδ' ὑπεζυρημένον,
ἀλλὰ μοι μικρός τις εἶη καὶ περὶ κνήμας ἰδεῖν
ροικός, ἀσφαλέως βεβηκῶς ποσσί, καρδῆς πλέως.

Metro: tetrametri trocaici catalettici (4trp: I wl χύwI xI| wl χύwuI); sinizesi: vv. 1 φιλέω, 4 ἀσφαλέως; anapesto per trocheo: v. 1 διᾶπεπλιγμένον.

(**1s.**) Dio Chrys. 33,17 (I); (**1, 3s.**) Gal. XVIII/1 605 (II); (**3s.**) Gal. XVIII/1 537 (III); (**3s.-ποσσί**) Erotian. fr. 43 Nachanson (IV); (**3**) *schol.* Theocr. 4,49a (V). Cf. (**3s.**) Dio Chrys. 33,17; (**4**) Poll. II 192 || **1** διαπεπλιγμένον Hemsterhuys : -πλεγμένον I : -πηγμένον II || **3** μικρός IV (necnon Dio) : μικρ- III : μακρ- II : ροικός V | περὶ κνήμας ἰδεῖν II, III, IV : κατὰ κνήμην i- V(codd. pll. : περὶ λῆμην i- U quod περὶ κνήμην i- fort. resp.) : ἐπὶ κνήμασιν δασύς Dio || **4** ροικός II, III, IV : ραιβός Poll. et Dio